



समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	02-11-24	3	5-8

# The Tribune

## 19 suggestions adopted for rabi crop during agriculture officers' workshop at HAU

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, NOVEMBER 21

During the two-day state-level agriculture officers' workshop held at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, 19 new recommendations were adopted for farmers of rabi crop. The workshop concluded here on Thursday.

Vice-Chancellor Prof BR Kamboj was the chief guest during the concluding session of this workshop. The agriculture officers from across the state and the scientists of HAU discussed in detail about the overall recommendations of rabi crop, highlighting their technical aspects.

Prof Kamboj said 19 recommendations had been accepted in the workshop, which included one for wheat crop, two for spring maize, one for lentils, one for fodder oats and one for medicinal crop, bakia. Farmers would benefit from these recommendations, which were made jointly by the scientists of HAU and the



Participants during the workshop at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University in Hisar.

officials of the department of agriculture and farmers welfare in the workshop, he said.

The VC said the agriculture-related recommendations given in this workshop would give further impetus to the work being done by the Central and state governments to increase the income of farmers. The VC called upon the scientists to understand the problems of small landholding farmers properly and con-

duct research on the solution to those problems.

The 19 recommendations include WH 1402, wheat variety for drought tolerance and suitable for early sowing. The average yield of WH 1402 is 20.1 quintals per acre. This variety is highly disease-resistant and is of excellent quality. Besides, a single cross hybrid variety of maize (IMH 225) with yellow grains and medium duration that gets

ready for harvest in 115-120 days in spring. This variety has been found to be resistant to major diseases and pests of maize at the national level and has an average yield of 36-38 quintals per acre.

Additional Director of Agriculture and Farmers Welfare Department Dr RS Solanki, along with the scientists of the university and officers of the department, was present on the occasion.



Dignitaries during the workshop at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University in Hisar on Thursday. TRIBUNE PHOTO



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,  
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	22-11-24	6	7-8

# THE TIMES OF INDIA

INDIA'S LARGEST ENGLISH NEWSPAPER | To subscribe call 1800 1200 004 or visit [subscribe.timesofindia.com](http://subscribe.timesofindia.com)

## 19 proposals to help farmers approved

Kumar Mukesh | TNN

**Hisar:** A two-day state level agriculture officer workshop held at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University has concluded on Thursday. HAU vice chancellor Professor B R Kamboj was the chief guest during the concluding session of the workshop. In this workshop, agriculture officers from across the state and scientists of HAU University discussed in detail about the overall recommendations of Rabi crops, and discussed other important technical aspects.

Prof Kamboj said that 19

recommendations have been accepted in this workshop, which include one on wheat, two on spring maize, one on lentils, one on fodder oats and one on medicinal crop Bakla. The agriculture related recommendations given in this workshop will give further impetus to the work being done by the central and state government to increase the income of farmers. The vice chancellor called upon the scientists to first understand the problems of small landholding farmers properly, and then do research on the solution of those problems.



समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	22-11-24	3	7-8

## कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशें हुई स्वीकृत

एचएयू में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला हुई



कार्यशाला में वीसी प्रो. बीआर काम्बोज व अन्य अधिकारी।

भास्कर न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि कॉलेज के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ। इसमें मुख्य अतिथि एचएयू के कुलपति प्रो. बी आर काम्बोज रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों और एचएयू के वैज्ञानिकों ने रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में चर्चा की तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार-विमर्श किया गया।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि इस कार्यशाला में 19 सिफारिशें स्वीकृत की गई हैं, जिनमें एक गेहूं, दो बसंत कालीन मक्का, एक मसर, एक चारा जई की एवं

एक औषधीय फसल बाकला के अलावा गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश, धान-गेहूं फसल चक्र में पराली प्रबंधन, गन्ने की फसल में चोटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथाम तथा एकीकृत कृषि प्रणाली हेतु फसल चक्र भी शामिल हैं। कार्यशाला में हकूवि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से की गई। इन सिफारिशों से किसानों को फायदा होगा।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. आर.एस. सोलंकी, डॉ. रमेश वर्मा, डॉ. एचएस सहारण सहित विवि के वैज्ञानिक एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

### इस कार्यशाला में ये सिफारिशें स्वीकृत हुईं

■ डब्ल्यू एच 1402: गेहूं की यह बीनी किस्म सूखा सहनशील एवं अगेती बिजाई के लिए उपयुक्त है। डब्ल्यू एच 1402 की औसत पैदावार 20.1 क्विंटल प्रति एकड़ व उत्पादन क्षमता 27.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म अत्यंत रोगरोधी है और गुणवत्ता में उत्तम है।

■ आईएमएच 225: यह मक्का की पीले दाने व मध्यम अवधि वाली एकल संकर किस्म है जो बसंत ऋतु में 115-120 दिन में पककर तैयार होती है। यह किस्म राष्ट्रीय स्तर पर मक्का की मुख्य बीमारियों व कीटों के अवरोधी व मध्यम अवरोधी है। इसकी औसत पैदावार 36-38 क्विंटल प्रति एकड़ है।

■ आईएमएच 226: यह मक्का की हल्की चारंगी दाने व मध्यम अवधि वाली एकल संकर किस्म है जो बसंत ऋतु में 115-120 दिन में पककर तैयार होती है। यह मुख्य

बीमारियों व कीटों के अवरोधी व मध्यम अवरोधी पाई है। इसकी औसत पैदावार 34-38 क्विंटल प्रति एकड़ है।

■ एलएच 17-19: मसूर की इस छोटे दाने वाली किस्म भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया है। मध्यम अवधि वाली यह किस्म 6.0-6.5 क्विंटल प्रति एकड़ की औसत पैदावार देती है।

■ आर. एच. 1975: इस किस्म की सिफारिश जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए की है। यह किस्म 145 दिन में पक कर 10.5-11.5 क्विंटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इसमें तेल की औसत मात्रा 39.3 प्रतिशत है।

■ एच एफ ओ 906: एक कटाई वाली चारा जई की इस किस्म की हरियाणा के लिए सिफारिश की है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिन क जागरण	22-11-24	4	1-6

# राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशें हुई स्वीकृत : कुलपति



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में कृषि अधिकारी कार्यशाला में संबोधित करते कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज व साथ में उपस्थित डा. आरएस सोलंकी व अन्य • जागरण

जागरण संवाददाता • **हिसार:** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ। इसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज रहे। कार्यशाला में प्रदेश भर के कृषि अधिकारियों और हकूवि के वैज्ञानिकों की तरफ से रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि इस कार्यशाला में 19

सिफारिशें स्वीकृत की गई हैं। इसमें एक गेहूँ, दो बसंत कालीन मक्का, एक मसर, एक चारा जई की एवं एक औषधीय फसल बाकला के अलावा गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश, धान-गेहूँ फसल चक्र में पराली प्रबंधन, गन्ने की फसल में चोटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथाम तथा एकीकृत कृषि प्रणाली हेतु फसल चक्र भी शामिल हैं। कार्यशाला में हकूवि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों की तरफ से संयुक्त रूप से की गई इन सिफारिशों से किसानों को फायदा होगा।

उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला

में दी गई कृषि से संबंधित सिफारिशों से केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा किसानों को आय बढ़ाने के लिए किए जा रहे कार्यों को और गति मिलेगी। कुलपति ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे कम जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे ढंग से समझे, इसके बाद इन समस्या के निवारण पर शोध करें। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डा. आरएस सोलंकी, डा. रमेश वर्मा, डा. एचएस सहारण सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारी मौजूद रहे। मंच का संचालन डा. सुनील ढांडा ने किया।

### कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित कार्यशाला में इन सिफारिशों को मिली स्वीकृत

- डब्ल्यूएच 1402 गेहूँ की यह बौनी किस्म सूखा सहनशील एवं अग्रेसी बिजाई के लिए उपयुक्त है। डब्ल्यूएच 1402 की औसत पैदावार 20.1 क्विंटल प्रति एकड़ व उत्पादन क्षमता 27.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म अत्यंत रोगरोधी है और गुणवत्ता में उत्तम है।
- आइएमएच 225 : यह मक्का की पीले दाने व मध्यम अवधि वाली एकल संकर किस्म है जो बसंत ऋतु में 115-120 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। यह किस्म राष्ट्रीय स्तर पर मक्का की मुख्य बिमारियों व कीटों के अवरोधी व मध्यम अवरोधी पाई गई है। इसकी औसत पैदावार 36-38 क्विंटल प्रति एकड़ है।
- आइएमएच 226 : यह मक्का की हल्की नारंगी दाने व मध्यम अवधि वाली एकल संकर किस्म है जो बसंत ऋतु में 115-120 दिन में पककर तैयार हो जाती है। यह किस्म मुख्य बीमारियों व कीटों के अवरोधी व मध्यम अवरोधी पाई गई है। इसकी औसत पैदावार

- 34-38 क्विंटल प्रति एकड़ है।
- एलएच 17-19 : मसूर की इस छोटे दाने वाली किस्म भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है। मध्यम अवधि वाली यह किस्म 6.0 - 6.5 क्विंटल प्रति एकड़ की औसत पैदावार देती है।
- आरएच 1975 : इस किस्म की सिफारिश जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए की गई है। यह किस्म 145 दिनों में पक कर 10.5-11.5 क्विंटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इस किस्म में तेल की औसत मात्रा 39.3 प्रतिशत है।
- एचएफओ 906 : एक कटाई वाली चारा जई की इस किस्म की हरियाणा के लिए सिफारिश की गई है। यह किस्म 262.00 क्विंटल प्रति एकड़ हरे चारे की पैदावार देती है।
- हरियाणा बाकला 3 : इस किस्म की औसत उपज 9.5 क्विंटल प्रति एकड़ है तथा इसकी अधिकतम उपज 20

क्विंटल प्रति एकड़ है इसमें प्रोटीन की मात्रा 28 प्रतिशत होती है। इसकी खेती हरियाणा के सिंचित और अर्ध सिंचित क्षेत्रों में की जा सकती है।

• धान-गेहूँ फसल चक्र में पराली प्रबंधन हेतु, स्ट्रा मैनेजमेंट सिस्टम लगे हुए कंबाइन हार्वेस्टर द्वारा धान की कटाई के उपरांत पराली को मिट्टी में मिलाने के साथ-साथ गेहूँ की बिजाई के लिए सुपर सीडर का उपयोग करें। इस मशीन से गेहूँ की बिजाई करने पर परम्परागत विधि की तुलना में 43 प्रतिशत ईंधन, 36 प्रतिशत श्रम तथा 40 प्रतिशत बिजाई लागत की बचत होती है।

• गन्ने की फसल में चोटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथाम के लिए अप्रैल अंत से मई के प्रथम सप्ताह तक क्लोरेनट्रानिलीपरोल 18.5 प्रतिशत एस सी (कोराजन / सीटीजन) 150 मि.ली. प्रति एकड़ की दर से 400 लीटर पानी में मिलाकर पीट वाले पंप से मोटा फव्वारा बनाकर फसल के जड़ क्षेत्र में डालकर हल्की सिंचाई करें।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उत्तर राजा	22-11-24	2	2-8

# गेहूं की डब्ल्यूएच 1402; मक्का की आईएमएच 225-226 किस्म की सिफारिश

एचएयू में आयोजित राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशें हुईं स्वीकृत, सरसों की किस्म आरएच 1975, चारा जई की एचएफओ 906 भी शामिल

माई सिटी रिपोर्टर



एचएयू में आयोजित कार्यशाला में मौजूद यूसी प्रो. बीआर कांबोज व अन्य। श्रेष्ठ संस्करण

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशें स्वीकृत की गई हैं। इसमें गेहूँ, मक्का, मसूर, चारा जई, औपधीय फसल बाकला, गर्मा के मौसम में मक्का की समग्र सिफारिश है।

इसके अलावा धान-गेहूँ फसल चक्र में पराली प्रबंधन, गन्ने की फसल में चोटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथाम और एकीकृत कृषि प्रणाली के लिए फसल चक्र को लेकर भी सिफारिश की गई है।

डब्ल्यूएच 1402 गेहूँ की बीनी किस्म सुखा, सहनशील एवं अगेती बिजाई के लिए उपयुक्त है। जिसकी औसत पैदावार 20.1 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म अत्यंत रोगरोधी, गुणवत्ता में उत्तम है।

कार्यशाला के समापन सोके पर मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि दो दिवसीय कार्यशाला से अच्छे निष्कर्ष निकले हैं। एचएयू के वैज्ञानिकों एवं कृषि और किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से की गई इन सिफारिशों से किसानों को फायदा होगा।

इन सिफारिशों से किसानों की आय बढ़ाने के लिए किए जा रहे कार्यों को और

गति मिलेगी। वैज्ञानिक क्रम जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे ढंग से समझें, उसके बाद उनके समस्या के निवारण पर शोध करें। इस अवसर पर कृषि विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. आरएस सोलंकी, डॉ. रमेश वर्मा, डॉ. एचएस सहारण सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारी मौजूद रहे। मंच का संचालन डॉ. सुनील ढोंडा ने किया।

### कार्यशाला में स्वीकृत हुई सिफारिशें

- डब्ल्यूएच 1402** : गेहूँ की बीनी किस्म सुखा सहनशील एवं अगेती बिजाई के लिए उपयुक्त, औसत पैदावार 20.1 क्विंटल प्रति एकड़।
- आईएमएच 225** : औसत पैदावार 36-38 क्विंटल प्रति एकड़, यह मक्का की पीले दाने वाली एकल संकर किस्म 115-120 दिन में तैयार होती है। बीमारियों व कीटों के अवरोधी।
- आईएमएच 226** : हल्की नारंगी दाने वाली एकल संकर किस्म की यह मक्का 115-120 दिन में पककर तैयार होती है। बीमारियों व कीटों के अवरोधी, औसत पैदावार 34-38 क्विंटल प्रति एकड़।
- एलएच 17-19** : मसूर की इस छोटे दाने वाली किस्म भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है। 6.0 - 6.5 क्विंटल प्रति एकड़ की औसत पैदावार।
- आरएच 1975** : जम्मु, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों के लिए सरसों की यह किस्म 145 दिनों में पक कर 10.5-11.5 क्विंटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। तेल की औसत मात्रा 39.3 प्रतिशत है।
- एच एफ ओ 906** : एक कटाई वाली चारा जई की इस किस्म की हरियाणा के लिए सिफारिश की गई है। यह किस्म 262.00 क्विंटल प्रति एकड़ हरे चारे की पैदावार देती है।
- हरियाणा बाकला 3** : औसत उपज 9.5 क्विंटल प्रति एकड़, प्रोटीन की मात्रा 28 प्रतिशत। हरियाणा के सिंचित और अर्ध सिंचित क्षेत्रों के लिए अनुमोदित।
- धान-गेहूँ फसल चक्र में पराली प्रबंधन के लिए, स्प्रू मैनेजमेंट सिस्टम लगे हुए केबाइन हॉर्वेस्टर द्वारा धान की कटाई के उपरान्त पराली को मिट्टी में मिलाने के साथ-साथ गेहूँ की बिजाई के लिए सुपर सोडर का उपयोग करें।** इस मशीन से गेहूँ की बिजाई करने पर परंपरागत विधि की तुलना में 43 प्रतिशत बिजाई लागत की बचत होती है।
- गन्ने की फसल में चोटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथाम के लिए अप्रैल अंत से मई के प्रथम सप्ताह तक ब्लीचिंग पाउडर 18.5 प्रतिशत एम सी (कोयला/सीटीवन) 150 मिली. प्रति एकड़ की दर से 400 लीटर पानी में मिलाकर पीठ वाले पंप से मोटा फव्वारा बनाकर फसल के जड़ क्षेत्र में डालकर हल्की सिंचाई करें।**



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	22-11-24	11	6-8

## राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशें स्वीकृत हुईं

हरिभूमि न्यूज ► हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों और हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि इस कार्यशाला में 19 सिफारिशें स्वीकृत की गई हैं जिनमें एक गेहूँ, दो बसंत कालीन मक्का, एक मसर, एक चारा जई की एवं एक औषधीय फसल बाकला के अलावा गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने के लिए समग्र सिफारिश, धान-गेहूँ फसल चक्र में पराली प्रबंधन, गन्ने की फसल में चोटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथाम तथा एकीकृत कृषि प्रणाली हेतु फसल चक्र भी शामिल हैं। कार्यशाला में हकृवि के वैज्ञानिकों



हिसार। कार्यशाला को संबोधित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज। फोटो : हरिभूमि

एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से की गई इन सिफारिशों से किसानों को फायदा होगा। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला में दी गई कृषि से संबंधित सिफारिशों से केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा किसानों की आय बढ़ाने के लिए किए जा रहे कार्यों को और गति मिलेगी। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. आर.एस. सोलंकी, डॉ. रमेश वर्मा, डॉ. एचएस सहारण सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारी मौजूद रहे। मंच का संचालन डॉ. सुनील ढांडा ने किया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब सैसरी	22-11-24	3	3-7

# हकृवि में आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला संपन्न



कार्यशाला में उपस्थित अधिकारीगण।

हिसार, 21 नवम्बर (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशों स्वीकृत की गई हैं, जिनमें एक गेहूँ, दो बसंत कालीन मक्का, एक मसूर, एक चारा जई की एवं एक औषधीय फसल बाकला के अलावा गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश, धान-गेहूँ फसल चक्र में पराली प्रबंधन, गन्ने की फसल में चोटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथाम तथा एकीकृत कृषि प्रणाली हेतु फसल चक्र भी शामिल हैं।

ज्ञात रहे कि दो दिवसीय यह कार्यशाला आज संपन्न हुई। इस कार्यशाला में मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों और हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण

विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. आर.एस. सोलंकी, डॉ. रमेश वर्मा, डॉ. एच.एस. सहारण सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

### कार्यशाला में से की गई प्रमुख सिफारिशें

- डब्ल्यू.एच. 1402 गेहूँ की यह बीनी किस्म सूखा सहनशील एवं अगती बिजाई के लिए उपयुक्त है। डब्ल्यू.एच. 1402 की औसत पैदावार 20.1 क्विंटल प्रति एकड़ व उत्पादन क्षमता 27.2 क्विंटल प्रति एकड़ है। यह किस्म अत्यंत रोमरोधी है और गुणवत्ता में उत्तम है।

- आई.एम.एच. 225: यह मक्का की पीले दाने व मध्यम अवधि वाली एकल संकर किस्म है जो बसंत ऋतु में 115-120 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। यह किस्म राष्ट्रीय स्तर पर मक्का की मुख्य बिमारियों व कीटों के अवरोधी व मध्यम अवरोधी पाई गई है। इसकी औसत पैदावार 36-38 क्विंटल प्रति एकड़ है।

- आई.एम.एच. 226: यह मक्का की हल्की नारंगी दाने व मध्यम अवधि वाली एकल संकर किस्म है जो बसंत ऋतु में 115-120 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। यह किस्म मुख्य बीमारियों व कीटों के अवरोधी व मध्यम अवरोधी पाई गई है। इसकी औसत पैदावार 34-38 क्विंटल प्रति एकड़ है।

- एल.एच. 17-19: मसूर की इस छोटे दाने वाली किस्म भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में काश्त के लिए अनुमोदित किया गया है। मध्यम अवधि वाली यह किस्म 6.0-6.5 क्विंटल प्रति एकड़ की औसत पैदावार देती है।

- आर. एच. 1975: इस किस्म की सिफारिश जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए की गई है। यह किस्म 145 दिनों में पक कर 10.5-11.5 क्विंटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इस किस्म में तेल की औसत मात्रा 39.3 प्रतिशत है।

- एच.एफ.ओ. 906: एक कटाई वाली चारा जई की इस किस्म की हरियाणा के लिए सिफारिश की गई है। यह किस्म 262.00 क्विंटल प्रति एकड़ हरे चारे की पैदावार देती है।

- हरियाणा बाकला 3: इस किस्म की औसत उपज 9.5 क्विंटल प्रति एकड़ है तथा इसकी अधिकतम उपज 20 क्विंटल प्रति एकड़ है इसमें प्रोटीन की मात्रा 28 प्रतिशत होती है। इसकी खेती हरियाणा के सिंचित और अर्ध सिंचित क्षेत्रों में की जा सकती है।

- धान-गेहूँ फसल चक्र में पराली प्रबंधन हेतु, स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम लगे हुए कंबाइन हार्वेस्टर द्वारा धान की कटाई के उपरांत पराली को

मिट्टी में मिलाने के साथ-साथ गेहूँ की बिजाई हेतु सुपर सीडर का उपयोग करें। इस मशीन से गेहूँ की बिजाई करने पर परम्परागत विधि की तुलना में 43 प्रतिशत ईंधन, 36 प्रतिशत श्रम तथा 40 प्रतिशत बिजाई लागत की बचत होती है।

- गन्ने की फसल में चोटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथाम के लिए अप्रैल अंत से मई के प्रथम सप्ताह तक क्लोरेनट्रानिलीपरोल 18.5 प्रतिशत एस.सी. (कोराजन / सीटीजन) 150 मि.ली. प्रति एकड़ की दर से 400 लीटर पानी में मिलाकर पीठ वाले पंप से मोटा फुवारा बनाकर फसल के जड़ क्षेत्र में डालकर हल्की सिंचाई करें।

- गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश।

- एकीकृत कृषि प्रणाली की एक हेक्टेयर मॉडल पर शोध के आधार पर मूंग-गेहूँ (देसी) + सरसों (10:2), मक्का-लोबिया-जई-मीठी सुडान घास एवं मूंग-सरसों-मूंग फसल चक्रों की सिफारिश की गई।

कार्यशाला में हकृवि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से की गई इन सिफारिशों से किसानों को फायदा होगा। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला में दी गई कृषि से संबंधित सिफारिशों से केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा किसानों की आय बढ़ाने के लिए किए जा रहे कार्यों को और गति मिलेगी।

प्रो. बी.आर. काम्बोज,  
कुलपति हकृवि।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक हिन्दू	22-11-24	9	3-4

### राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशें स्वीकृत

हिसार, 21 नवंबर (हर)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला के अंतिम एवं दूसरे दिन बृहस्पतिवार को 19 सिफारिशें स्वीकृत की गई हैं जिनमें एक गेहूं, दो बसंत कालीन मक्का, एक मसर, एक चारा जई की एवं एक औषधीय फसल बाकला को उगाने की सिफारिशें भी शामिल हैं। इनके अलावा गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में

उगाने हेतु समग्र सिफारिश, धान-गेहूं फसल चक्र में पराली प्रबंधन, गन्ने की फसल में चोटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथाम तथा एकीकृत कृषि प्रणाली हेतु फसल चक्र भी इन सिफारिशों में शामिल किया गया है। कार्यशाला में मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे इसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों और हकूवि के वैज्ञानिकों द्वारा रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।





# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	22.11.2024	--	--

## राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशें हुई स्वीकृत : कुलपति



कार्यक्रम में मौजूद विश्वविद्यालय के अधिकारी एवं वैज्ञानिक।

सवेरा न्यूज/सुरेंद्र सोढी हिंसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों और हक्वि के वैज्ञानिकों द्वारा रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने कहा कि इस कार्यशाला में 19 सिफारिशें स्वीकृत की गई हैं जिनमें एक गेहूँ, दो बसंत कालीन मक्का, एक मसर, एक चारा जई की एवं एक औषधीय फसल बाकला के अलावा गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में उठाने हेतु समग्र सिफारिश, धान-गेहूँ फसल चक्र में पराली प्रबंधन, गन्ने की फसल में चोटी बेदक व कसुआ कोट की रोकथाम तथा एकीकृत कृषि प्रणाली हेतु फसल चक्र भी शामिल हैं। कार्यशाला में हक्वि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से की गई इन सिफारिशों से किसानों को फायदा होगा। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. आर.एस. सोलंकी, डॉ. रमेश वर्मा, डॉ. एच.एस. सहारण सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारी मौजूद रहे। मंच का संचालन डॉ. सुनील छांडा ने किया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जसमास न्यूज	21.11.2024	--	--

### कार्यशाला कम्ब जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे ढंग से समझें राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशें हुई स्वीकृत: प्रो. कांबोज

हृदय में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ

अमरावती न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभाघर में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे।

इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों और तकृषि के वैज्ञानिकों द्वारा रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकों पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। कुलपति प्रो.



बी.आर. काम्बोज ने कहा कि इस कार्यशाला में 19 सिफारिशें स्वीकृत की गई हैं जिनमें एक गेहूँ, दो खरीत कार्बोन चक्का, एक मसर, एक चारा जई को एवं एक औषधीय फसल बाकला के अलावा नवीं के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में खाने हेतु समग्र सिफारिश, धान-गेहूँ फसल चक्र में पराली प्रबंधन, गन्ने की फसल में छोटी बेदक या कंसुआ कीट को रोकथाम तथा एकीकृत कृषि प्रणाली हेतु फसल चक्र भी शामिल है। कार्यशाला में

हृदय के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से की गई इन सिफारिशों से किसानों को फायदा होगा।

उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला में दो गई कृषि से संबंधित सिफारिशों से केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा किसानों को आय बढ़ाने के लिए किए जा रहे कार्यों को और गति मिलेगी।

कुलपति ने वैज्ञानिकों से अपेक्षा की कि वे कम्ब जोत के किसानों की समस्या को पहले

अच्छे ढंग से समझे, उसके बाद इन समस्या के निवारण पर शोध करें। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. आर.एस. सोलंकी, डॉ. रमेश वर्मा, डॉ. एचएस सहारण सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

सत्र का संयोजन डॉ. सुनील डांडा ने किया। इस कार्यशाला में 19 सिफारिशें स्वीकृत हुईं जिनमें मुख्य निम्नलिखित हैं।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटीपल्स	21.11.2024	--	--

## राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में 19 सिफारिशें हुई स्वीकृत: प्रो. बी.आर. काम्बोज

हकृवि में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

सिटीपल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों और हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श

किया गया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि इस कार्यशाला में 19 सिफारिशें स्वीकृत की गई हैं जिनमें एक गेहू, दो बसंत कालीन मक्का, एक मसर, एक चारा जई की एवं एक औषधीय फसल बाकला के अलावा गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश, धान-गेहू फसल चक्र में पराली प्रबंधन, गन्ने की फसल में छोटी बेदक व कंसुआ कीट की ऐकथाम तथा एकीकृत कृषि प्रणाली हेतु फसल चक्र भी शामिल है।

### इस कार्यशाला में 19 सिफारिशें स्वीकृत हुई जिनमें मुख्य निम्नलिखित हैं:

1. डब्ल्यू एच 1402 गेहू की यह खेती किस्म सूखा सहनशील एवं अगेती बिगाई के लिए उपयुक्त है।
2. आईएमएच 225: यह मक्का की पीले दाने व मध्यम अवधि वाली एकल संकर किस्म है जो बसंत ऋतु में 115-120 दिन में पक कर तैयार हो जाती है।
3. आईएमएच 226: यह मक्का की हल्की नारंगी दाने व मध्यम अवधि वाली एकल संकर किस्म है जो बसंत ऋतु में 115-120 दिन में पककर तैयार हो जाती है।
4. एलएच 17-19: मसूर की इस छोटे दाने वाली किस्म भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में कास्ट के लिए अनुमोदित किया गया है।
5. आर. एच. 1975: इस किस्म की सिफारिश जम्मु, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में समग्र पर बिगाई के लिए की गई है। यह किस्म 145 दिनों में पक कर 10.5-11.5 घिटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इस किस्म में तेल की औसत मात्रा 39.3 प्रतिशत है।
6. एच एफ ओ 906: एक कटाई वाली घास जई की इस किस्म की हरियाणा के लिए सिफारिश की गई है। यह किस्म 262.00 किटल प्रति एकड़ हरे घारे की पैदावार देती है।
7. हरियाणा बाकला 3- इस किस्म की औसत उपज 9.5 किटल प्रति एकड़ है तथा इसकी अधिकतम उपज 20 किटल प्रति एकड़ है इसमें प्रोटीन की मात्रा 28 प्रतिशत होती है। इसकी खेती हरियाणा के सिंचित और अर्ध सिंचित क्षेत्रों में की जा सकती है।
8. धान-गेहू फसल चक्र में पराली प्रबंधन हेतु, र्टी मैनेजमेंट सिस्टम लगे हुए कंबाइन हार्वेस्टर द्वारा धान की कटाई के उपरान्त पराली को मिट्टी में गिलाने के साथ-साथ गेहू की बिगाई हेतु सुपर सीडर का उपयोग करें।
9. गन्ने की फसल में छोटी बेदक व कंसुआ कीट की रोकथाम के लिए अप्रैल अंत से मई के प्रथम सप्ताह तक क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोले 18.5 प्रतिशत एस सी (कोराजन / सीटीजन) 150 मि. ली. प्रति एकड़ की दर से 400 लीटर पानी में गिलाकर पीट वाले पंप से मोटा फुवारा बनाकर फसल के जड़ क्षेत्र में डालकर हल्की सिपाई करें।
10. गर्मी के मौसम में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश।
11. एकीकृत कृषि प्रणाली की एक हेयटेयर नॉडल पर शोध के आधार पर मूंग-गेहू (टेसी) + सरसों (10:2), मक्का+लोबिया-जई-मीठी सुझान घास एवं मूंग-सरसों-मूंग फसल चक्रों की सिफारिश की गई।

कार्यशाला में हकृवि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से की गई इन सिफारिशों से किसानों को फायदा होगा। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला में दी गई कृषि से संबंधित सिफारिशों से केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा किसानों की आय बढ़ाने के लिए किए जा रहे कार्यों को और गति मिलेगी।